करेंट अफेयर्स

उत्तराखंड

(संग्रह)

जुलाई 2025

Drishti, 641, First Floor,
Dr. Mukharjee Nagar, Delhi-110009
Inquiry: +91-87501-87501
Email: care@groupdrishti.in

अनुक्रम

उत्तराखंड 3

- गढ़वाल राइफल्स के नए कर्नल ऑफ द रेजिमेंट 3
- उत्तराखंड में बादल फटने की घटना 3
- कैलाश मानसरोवर यात्रा 4
- उत्तराखंड भू-तापीय ऊर्जा नीति 2025 5
- एमडीएमए ड्रग्स 7
- हरेला उत्सव 9
- उत्तराखंड के स्कूलों में गीता श्लोकों का पाठ 10
- उत्तराखंड में पर्यटक वहन क्षमता सर्वेक्षण 11

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

उत्तराखंड

गढ़वाल राइफल्स के नए कर्नल ऑफ द रेजिमेंट

चर्चा में क्यों ?

अंडमान और निकोबार कमान के कमांडर-इन-चीफ लेफ्टिनेंट जनरल दिनेश सिंह राणा ने उत्तराखंड के लैंसडाउन स्थित **गढ़वाल राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर** में आयोजित एक समारोह में **गढ़वाल राइफल्स** के **23वें 'कर्नल ऑफ द रेजिमेंट'** के रूप में आधिकारिक रूप से पदभार ग्रहण किया है। वे **लेफ्टिनेंट जनरल एन.एस. राजा सुब्रमणि** का स्थान लेंगे।

मुख्य बिंदु

- गढ़वाल राइफल्स:
  - गढ़वाल राइफल्स भारतीय सेना की एक प्रतिष्ठित पैदल सेना रेजिमेंट है, जिसकी स्थापना वर्ष **1887** में बंगाल सेना की 39वीं (गढ़वाल) रेजिमेंट के रूप में की गई थी।
  - यह रेजिमेंट आगे चलकर ब्रिटिश भारतीय सेना का हिस्सा बनी तथा भारत की स्वतंत्रता के पश्चात इसे भारतीय सेना में समाहित कर लिया गया।
  - इस रेजिमेंट के **सैनिक मुख्यत: उत्तराखंड** के **सात गढ़वाली ज़िलों— उत्तरकाशी, चमोली,** रुद्रप्रयाग, **टिहरी गढ़वाल, देहरादून, पौड़ी गढ़वाल तथा** हरिद्वार से आते हैं। **गढ़वाल स्काउट्स**, जो **जोशीमठ** में तैनात हैं, को **"**हिम तेंदुआ**"** उपनाम दिया गया है।
  - इस रेजिमेंट की पहचान **वीरता, साहस तथा राष्ट्र सेवा** की सशक्त विरासत से है, जो गढ़वाली योद्धाओं की गौरवशाली परंपरा को दर्शाती है। इसने **दोनों** विश्व युद्धों तथा **स्वतंत्रता के पश्चात** हुए अनेक **सैन्य संघर्षों** में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।
    - इसने वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध तथा वर्ष 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्धों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- यह रेजिमेंट **श्रीलंका में** ऑपरेशन पवन जैसे शांति अभियानों में अपनी प्रभावी भूमिका के लिये भी जानी जाती है।
- रेजिमेंट का आदर्श वाक्य है– ***"युद्धाय कृत निश्चय"*** अर्थात् **"दृढ़ संकल्प के साथ लड़ो"**।
- इसका **प्रतीक चिह्न** माल्टीज़ क्रॉस है, जो अब समाप्त हो चुकी **राइफल ब्रिगेड (प्रिंस कंसोर्ट्स ओन)** से प्रेरित है।
  - **गढ़वाल राइफल्स** ने अब तक कई **प्रतिष्ठित सैन्य सम्मान** प्राप्त किये हैं, जिनमें **तीन विक्टोरिया क्रॉस** तथा **एक** अशोक चक्र शामिल हैं।

उत्तराखंड में बादल फटने की घटना

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड के उत्तरकाशी में बादल फटने से भूस्खलन हुआ, प्रमुख **तीर्थयात्रा मार्ग** बाधित हुए तथा कई **श्रमिक** लापता हो गए।

- बाढ़ और **भूस्खलन** की आशंका वाले **ज़िलों** को **हाई अलर्ट** पर रखा गया है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

मुख्य बिंदु

- **बादल फटना (Cloudburst):**
  - बादल फटना एक अचानक और तीव्र वर्षा की घटना होती है, जिसमें लगभग 10 वर्ग किमी क्षेत्र में एक घंटे से भी कम समय में 10 सेमी से अधिक वर्षा हो जाती है।
  - यह ओलावृष्टि और गरज के साथ भी हो सकती है। बादल फटना विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्रों में सामान्य घटना है।
  - **स्थानीय प्रकृति** के कारण इसकी पहले से **भविष्यवाणी करना या पता लगाना कठिन** होता है, लेकिन इससे अचानक विनाशकारी वर्षा हो सकती है, जिससे **अचानक बाढ़** और **भूस्खलन** की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।
- **भूस्खलन (Landslide):**
  - **परिभाषा:** भूस्खलन वह प्रक्रिया है, जिसमें चट्टानों, **मिट्टी या मलबे** का ढलान की दिशा में गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से नीचे की ओर खिसकना होता है।
    - यह **द्रव्यमान क्षरण (mass wasting)** का एक रूप है, जिसमें पृथ्वी की सामग्री ढलान पर नीचे की ओर सरकती है।
  - **कारण:** भारी वर्षा, भूकंप तथा जल रिसाव जैसे **प्राकृतिक** कारक ढलानों को कमज़ोर करते हैं, जबकि वनों की कटाई और **निर्माण कार्यों** जैसी **मानव गतिविधियाँ** इस जोखिम को बढ़ाती हैं।
  - मिट्टी की संरचना और भू-आकृति जैसे **भौगोलिक कारक** भी ढलान की स्थिरता को प्रभावित करते हैं और भूस्खलन का कारण बन सकते हैं।
- **आकस्मिक बाढ़ (Flash Floods):**
  - **परिभाषा:**
    - आकस्मिक बाढ़ वह स्थिति होती है, जब तीव्र वर्षा के दौरान या तुरंत बाद जल स्तर **में तीव्र वृद्धि** होती है।
    - ये **अत्यधिक स्थानीयकृत और अल्पकालिक घटनाएँ हैं**, जो आमतौर पर वर्षा के 6 घंटे के भीतर घटित होती हैं।
  - **कारण:**
    - आकस्मिक बाढ़ मुख्यत: **तीव्र वर्षा** के कारण होती है, जो मिट्टी की **जल अवशोषण क्षमता** और **जल निकासी प्रणालियों** को प्रभावित करती है।
    - भारी वर्षा के अतिरिक्त, **तापमान में अचानक वृद्धि** से होनेवाली **शीघ्र हिम पिघलन**, **बाँध या तटबंध का टूटना**, **बर्फ या मलबे की रुकावट** तथा ग्लेशियर झील **का अचानक फटना** भी इसके कारण हो सकते हैं।
    - इसके अलावा, शहरीकरण के चलते **सड़कों और इमारतों** जैसी **अवशोषण-रहित सतहों** से जल का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे मिट्टी में जल समावेशन कम होकर बाढ़ का खतरा और बढ़ जाता है।

कैलाश मानसरोवर यात्रा

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने टनकपुर से पवित्र कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिये तीर्थयात्रियों के पहले जत्थे को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

मुख्य बिंदु

- **कैलाश मानसरोवर यात्रा के बारे में:**
  - **विदेश मंत्रालय (MEA)** हर वर्ष **जून से सितंबर** के बीच इस यात्रा का आयोजन करता है।
  - यह तीर्थयात्रा दो आधिकारिक मार्गों से होकर गुजरती है: उत्तराखंड में **लिपुलेख दर्रा** और सिक्किम में **नाथू ला दर्रा** से।
  - **भारत-चीन सीमा विवाद** के कारण भारतीय तीर्थ यात्रियों को लगभग दो दशकों तक कैलाश तक पहुँचने से वंचित रखा गया था।
  - वर्ष 1981 में विदेश मंत्रालय की निगरानी और चीनी सरकार के सहयोग से यात्रा पुन: शुरू हुई।
- **धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व:**
  - भगवान शिव के निवास के रूप में स्थापित **कैलाश पर्वत**, **हिंदू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म** और तिब्बत की बोनपा परंपरा में पवित्र महत्त्व रखता है।
  - हिंदू इसे आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र मानते हैं, जैन मानते हैं कि **ऋषभदेव** ने यहीं निर्वाण प्राप्त किया था; बौद्ध इसे **युंगडुक गु त्सेग** (नौ मंज़िला स्वस्तिक पर्वत) कहते हैं।
- **भौगोलिक विशेषताएँ:**
  - कैलाश पर्वत (6,675 मीटर) पश्चिमी तिब्बत में स्थित है, जिसे स्थानीय रूप से कांग रामपोछे या बहुमूल्य रत्न के नाम से जाना जाता है।
  - कैलाश के दक्षिण में **राकसताल** (रावण ह्रद), मानसरोवर और गुरला मंढाता शिखर (7,683 मीटर) स्थित हैं।
  - मानसरोवर झील 4,530 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, इसकी परिधि 90 किमी, गहराई 90 मीटर तथा क्षेत्रफल 320 वर्ग किमी है।
    - राकसताल की परिधि 22 किमी है और यह गंगाछू नामक 6 किमी लंबी नहर के माध्यम से मानसरोवर से जुड़ा हुआ है।
  - हिमालय के उत्थान के दौरान, कैलाश के पास चार महान नदियाँ उत्पन्न हुईं: सिंधु (उत्तर), करनाली (दक्षिण), **यारलुंग त्संगपो** (पूर्व), **सतलुज** (पश्चिम), जो राकसताल से निकलती हैं।

- **लिपुलेख दर्रा (उत्तराखंड):**
  - यह **मानसरोवर** (सीमा से 50 किमी) जाने का सबसे छोटा मार्ग है, लेकिन उबड़-खाबड़ रास्ते के कारण इसकी यात्रा 200 किमी तक लंबी हो जाती है।
  - यह वर्ष 1992 में चीन के साथ व्यापार के लिये खोली गई पहली भारतीय सीमा चौकी थी, इसके बाद **शिपकी ला** (1994) और **नाथू ला** (2006) भी खोली गई।
- **नाथू ला दर्रा (सिक्किम):**
- **वर्ष** 2015 में खोला गया यह 1,500 किमी लंबा पूर्णत: वाहन योग्य मार्ग, दुनिया की सबसे ऊँची वाहन योग्य सड़कों में से एक है तथा तीर्थयात्रियों को बिना चढ़ाई के यात्रा पूरी करने की सुविधा देता है।
- नाथू ला सिक्किम को चीन के **तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (TAR)** से जोड़ता है और यह प्राचीन **सिल्क रोड** का हिस्सा है।

उत्तराखंड भू-तापीय ऊर्जा नीति 2025

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड मंत्रिमंडल ने **आर्थिक** और **पर्यावरणीय** दृष्टि से **सतत् भू-तापीय संसाधनों** की खोज और विकास के लिये **वैज्ञानिक** और **तकनीकी अनुसंधान** को बढ़ावा देने हेतु **उत्तराखंड भू-तापीय ऊर्जा नीति 2025** को **मंज़ूरी** दी।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **मंत्रिमंडल** ने **राज्य स्तरीय खनिज ट्रस्टों** के गठन को प्रोत्साहित करने के लिये **उत्तराखंड राज्य खनिज अन्वेषण ट्रस्ट नियम, 2025** को **मंज़ूरी** दी।
- इसने वर्ष **2017 के नियमों** के स्थान पर उत्तराखंड ज़िला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट नियम, 2025 में **संशोधन** को भी **मंज़ूरी** दी।

मुख्य बिंदु

- **भू-तापीय ऊर्जा नीति 2025 के बारे में:**
  - नीति का उद्देश्य **भूतापीय स्थलों का उपयोग बिजली उत्पादन, जल** -भोजन और शीतलन, जल शोधन और सामुदायिक विकास के लिये करना है।
  - सरकार **उत्तराखंड की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाना,** कार्बन उत्सर्जन **को** कम करना और दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान करना चाहती है।
  - ऊर्जा विभाग, **उत्तराखंड** अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी (UREDA) और **उत्तराखंड जल विद्युत निगम लिमिटेड (UJVNL)** के सहयोग से राज्य की सभी भू-तापीय परियोजनाओं में इस नीति को लागू करेगा।
- **परियोजना अवधि और आवंटन प्रक्रिया:**
  - सरकार भू-तापीय परियोजनाओं को चालू होने की तिथि से अधिकतम 30 वर्षों के लिये आवंटित करेगी।
  - परियोजनाएँ प्रतिस्पर्द्धी बोली या अन्य निर्दिष्ट तरीकों के माध्यम से केंद्रीय या राज्य सार्वजनिक उपक्रमों या निजी डेवलपर्स को दी जा सकती हैं।
- **उत्तराखंड में भूतापीय ऊर्जा का भूवैज्ञानिक आधार:**
  - हिमालयी क्षेत्र में गर्म झरने या भूतापीय स्रोत तब बनते हैं जब भूमिगत जल भूतापीय बिंदुओं तक पहुँचता है और तापीय छिद्रों के माध्यम से बाहर निकलता है।
  - **ऊष्मा उत्पादन** ज्वालामुखी गतिविधि, टेक्टोनिक हलचल और पृथ्वी की सतह के नीचे चट्टान निर्माण के कारण होता है।
    - जब कोई जल स्रोत इन क्षेत्रों के पास से प्रवाहित होता है, तो वह ऊष्मा को अवशोषित कर लेता है और तापीय छिद्रों के माध्यम से गर्म झरनों के रूप में बाहर निकलता है।
  - भूतापीय स्रोत मुख्य केंद्रीय थ्रस्ट के पास स्थित होते हैं, जो एक **भूवैज्ञानिक भ्रंश रेखा है,** जहाँ भारतीय प्लेट **यूरेशियन प्लेट से मिलती है।**
- उदाहरण के लिये, मणिकरण **(हिमाचल प्रदेश), गौरीकुंड (उत्तराखंड)**

भू-तापीय ऊर्जा

- भूतापीय ऊर्जा **पृथ्वी के आंतरिक भाग से निकलने वाली ऊष्मा है,** जो **रेडियोधर्मी क्षय** द्वारा उत्पन्न होती है। यह **नवीकरणीय** है जो 24/7 आधारभूत ऊर्जा प्रदान करती है, क्योंकि पृथ्वी निरंतर ऊष्मा उत्पन्न करती रहती है।
- भारत में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) द्वारा **381 भूतापीय रूप से असामान्य स्थलों की पहचान की गई है,** जिनमें 10,600 मेगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता है, **जो 1 करोड़ घरों को** बिजली देने के लिये पर्याप्त है।
  - प्रमुख परियोजनाओं में **मनुगुरु, तेलंगाना में 20 किलोवाट का पायलट प्लांट** और **पुगा घाटी**, लद्दाख में **ONGC की 1 मेगावाट की परियोजना शामिल हैं।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

- भारत ने भूतापीय ऊर्जा सहयोग के लिये **आइसलैंड** (2007), **सऊदी अरब** (2019) जैसे देशों के साथ समझौते किये हैं तथा **अमेरिका (2023) के साथ नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी कार्रवाई मंच (RETAP) पर समझौते किये हैं।**
- **भूतापीय विशेषताएँ:**
  - **गीजर (Geysers):** ये भूतापीय संरचनाएँ हैं, जो **भूमिगत तापन के कारण समय-समय पर पानी और भाप बाहर निकालती हैं।**
    - ज्वालामुखी क्षेत्रों में भूमिगत गुहाओं को भरने के लिये **गीज़रों को भारी मात्रा में भूजल की आवश्यकता होती है। आस-पास के मैग्मा द्वारा गर्म होने पर, पानी भाप में बदल जाता है,** जिससे गर्म पानी और भाप का विस्फोट होता है।
    - **उदाहरण:** येलोस्टोन राष्ट्रीय उद्यान (अमेरिका)
  - **फ्यूमरोलेस (Fumaroles):** ये पृथ्वी की सतह पर ऐसी दरारें होती हैं जहाँ से ज्वालामुखीय गैसें और भाप बाहर निकलती हैं।
    - फ्यूमरोलेस तब उत्पन्न होते हैं जब मैग्मा जल स्तर से होकर गुजरता है, जिससे पानी गर्म हो जाता है और भाप ऊपर उठती है तथा **हाइड्रोजन सल्फाइड (H_2S)** जैसी ज्वालामुखी गैसें सतह पर आ जाती हैं।
    - यह संरचना अक्सर ऐसे क्षेत्रों में पाई जाती है, जहाँ ज्वालामुखी निष्क्रिय हो रहा होता है।
- **उदाहरण:** बैरन द्वीप (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह)
  - **मडपॉट्स (Mudpots):** ये मिट्टी के बुदबुदाते हुए तालाब हैं, जो भूतापीय क्षेत्रों में बनते हैं।
    - यह तब बनता है जब सीमित भूतापीय जल कीचड़ और चिकनी मिट्टी के साथ मिल जाता है।
- **उदाहरण:** येलोस्टोन राष्ट्रीय उद्यान (अमेरिका)

एमडीएमए ड्रग्स

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड पुलिस ने **भारत-नेपाल सीमा** के पास एक महिला को **10.23 करोड़ रुपए** मूल्य के 5.688 किलोग्राम **मिथाइलीनडाइऑक्सी-मिथाइलैम्फेटामाइन (MDMA)** के साथ गिरफ्तार किया और उसके **खिलाफ स्वापक औषधि एवं मन:प्रभावी पदार्थ अधिनियम, 1985** के तहत मामला दर्ज किया।

नोट: भारत की **राष्ट्रीय स्वापक औषधि एवं मन:प्रभावी पदार्थ नीति,** संविधान के **अनुच्छेद 47** द्वारा निर्देशित है, जो राज्य से औषधीय उपयोग को छोड़कर, **स्वास्थ्य के लिये हानिकारक मादक पदार्थों** के सेवन पर **प्रतिबंध** लगाने का निर्देश देता है।

- देश में **नशीली दवाओं के दुरुपयोग को नियंत्रित** करने और **मादक पदार्थ कानूनों को लागू करने** की प्राथमिक ज़िम्मेदारी **केंद्र सरकार** की है।

मुख्य बिंदु

- **MDMA के बारे में:**
  - **MDMA (3,4-मिथाइलीनडाइऑक्सी-मिथाइलैम्फेटामाइन), एमफैटेमिन** का एक **कृत्रिम व्युत्पन्न** है, जिसे व्यापक रूप से **मनोरंजक दवा** के रूप में जाना जाता है। **1980 के दशक** से यह **एक्स्टसी, ई, मौली, XTC, X, बीन्स** और **एडम्स** जैसे नामों से लोकप्रिय रहा है।
  - **MDMA, मनो:सक्रिय पदार्थों** के एक वर्ग से संबंधित है, जिसे **एंटाक्टोजेन्स** (ग्रीक में, जिसका अर्थ है "अंदर तक छूना") कहा जाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

- एक एंटाक्टोजेन्स के रूप में यह **उत्साह उत्पन्न** करता है, **भावनात्मक निकटता** बढ़ाता है, **सहानुभूति और संचार** को प्रोत्साहित करता है तथा **दमित स्मृतियों को पुन: प्राप्त करने** में सहायता करता है।
- यह **हृदय, तंत्रिका, वृक्क और यकृत** प्रणालियों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।
- इसके संभावित रूप से जानलेवा प्रभावों की तत्काल पहचान और नैदानिक एवं आपातकालीन स्थितियों में हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

स्वापक औषधि एवं मन:प्रभावी पदार्थ अधिनियम, 1985:

- यह अधिनियम मादक दवाओं और मन:प्रभावी पदार्थों से संबंधित **विनिर्माण, परिवहन तथा उपभोग** जैसे कुछ कार्यों को नियंत्रित करता है।
- अधिनियम के तहत, कुछ अवैध गतिविधियों जैसे भाँग की खेती, मादक दवाओं का निर्माण या उनमें संलिप्त व्यक्तियों को शरण देना एक अपराध है।
- इस अपराध के लिये दोषी पाए जाने वाले व्यक्तियों को **कम-से-कम 10 वर्ष के कठोर कारावास,** जिसे **20 वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है तथा कम-से-कम 1 लाख रुपए** का जुर्माना लगाया जा सकता है।
- **इसमें मादक दवाओं और मन:प्रभावी पदार्थों** के अवैध व्यापार से प्राप्त या उसमें प्रयुक्त **संपत्ति को ज़ब्त करने** का भी प्रावधान है।
- कुछ मामलों में जहाँ अपराध **दुहराया गया हो**, वहाँ **मृत्युदंड** का भी प्रावधान है।
- इस अधिनियम के तहत वर्ष 1986 में **नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB)** का गठन किया गया।

भारत में नशीली दवाओं के दुरुपयोग से निपटने के लिये उठाए गए कदम:

- **प्रोजेक्ट सनराइज़:**
  - इसे स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा वर्ष 2016 में भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में, विशेष रूप से इंजेक्शन द्वारा नशीली दवाओं का सेवन करने वाले लोगों में, **बढ़ते HIV प्रसार से निपटने के लिये** शुरू किया गया था।
- **नशा मुक्त भारत:**
  - सरकार द्वारा **'नशा मुक्त भारत'** अभियान शुरू किया गया है, जो **समुदाय आधारित जन जागरूकता कार्यक्रमों** पर केंद्रित है।
- **निदान और NCORD पोर्टल:**
  - ये **ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स** हैं, जो नशा अपराधियों का विस्तृत **डाटा-बेस** रखते हैं तथा कानून प्रवर्तन एजेंसियों को नशा संबंधित अपराधों और प्रवृत्तियों को ट्रैक करने में मदद करते हैं।
- **ज़ब्ती सूचना प्रबंधन प्रणाली(SIMS):**
  - **नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो** को **SIMS सॉफ्टवेयर** विकसित करने हेतु वित्तीय सहायता दी गई है, जो **नशा अपराधों और अपराधियों का एक पूर्ण ऑनलाइन डाटा-बेस** तैयार करेगा।
- **राष्ट्रीय नशा-सेवन सर्वेक्षण:**
  - **सरकार एम्स के राष्ट्रीय नशा निर्भरता उपचार केंद्र** की सहायता से सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के माध्यम से भारत में नशीली दवाओं के दुरुपयोग की प्रवृत्ति को मापने के लिये राष्ट्रीय नशा-सेवन सर्वेक्षण भी आयोजित कर रही है।

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB):

- भारत सरकार ने **स्वापक औषधि एवं मन:प्रभावी पदार्थ अधिनियम, 1985** (NDPS Act) के अंतर्गत वर्ष **1986** में **नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB)** की स्थापना की।
- NCB, भारत में **मादक पदार्थ** कानून प्रवर्तन के लिये सर्वोच्च समन्वय एजेंसी के रूप में कार्य करता है और **गृह मंत्रालय** के अधीन कार्य करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

हरेला उत्सव

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड ने हरेला पर्व के अवसर पर राज्य में 8.13 लाख से अधिक पौधे लगाकर एक नया कीर्तिमान बनाया, मुख्यमंत्री ने रुद्राक्ष का पौधा लगाकर अभियान का शुभारंभ किया।

मुख्य बिंदु

हरेला महोत्सव के बारे में:

- **परिचय:**
  - यह **उत्तराखंड** का पारंपरिक त्योहार है और यह हिंदू माह **श्रावण** में मानसून के मौसम और **बुवाई चक्र** की शुरुआत का प्रतीक है।
  - कुमाऊँ क्षेत्र और गढ़वाल के कुछ हिस्सों में व्यापक रूप से मनाया जाने वाला यह एक **धार्मिक** एवं **कृषि संबंधी** त्योहार है, जो **प्रकृति** तथा **कृषि** के प्रति आस्था पर आधारित है।
- **कृषि महत्त्व:**
  - **राज्य भर के परिवार** दस दिन पहले से ही **जौ, मक्का और सरसों** जैसे बीज बोकर इस त्योहार की तैयारी करते हैं।
  - ये बीज अंकुरित होकर हरे अंकुर बनाते हैं जिन्हें **हरेला कहा जाता है,** जिन्हें **प्रतीकात्मक रूप से काटा जाता है** और परिवार के सदस्यों के सिर पर समृद्धि तथा अच्छे स्वास्थ्य के आशीर्वाद के रूप में रखा जाता है।
- **धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान:**
  - यह त्योहार **भगवान शिव और देवी पार्वती** के दिव्य विवाह का भी स्मरण कराता है तथा कई घरों एवं मंदिरों में अनुष्ठानिक पूजा के लिये मिट्टी की मूर्तियाँ स्थापित की जाती हैं। भक्त अच्छी फसल, पर्यावरण सद्भाव और सामुदायिक कल्याण के लिये प्रार्थना करते हैं।
- **उत्सव और कार्यक्रम:**
  - पारंपरिक **लोकगीत, नृत्य और** स्थानीय मेले कस्बों तथा गाँवों में मनाए जाते हैं, जिनमें **अल्मोड़ा एवं नैनीताल में हरेला मेला** जैसे कार्यक्रम शामिल हैं।
  - बच्चे **गेडी नामक बाँस के खेल** में भाग लेते हैं, जबकि बुज़ुर्ग त्योहार मनाने के लिये सदियों पुरानी परंपराओं को निभाते हैं।
- **आधुनिक समय में महत्त्व:**
  - पहाड़ी क्षेत्रों में मुख्य रूप से हिंदू समुदायों द्वारा मनाया जाने वाला यह त्योहार मानव और प्रकृति के बीच गहरे संबंधों की याद दिलाता है।
  - कृषि, धार्मिक और पारिस्थितिक विषयों के मिश्रण के साथ, इस त्योहार का महत्त्व पिछले कुछ वर्षों में एक **सांस्कृतिक परंपरा तथा सार्वजनिक पर्यावरण आंदोलन** दोनों के रूप में बढ़ गया है।

वृक्षारोपण अभियान के बारे में

- **"हरेला मनाओ, धरती माता का ऋण चुकाओ"** पौधारोपण अभियान के अंतर्गत **13 ज़िलों** में कुल **8.13 लाख से अधिक पौधों** का रोपण किया गया, जो राज्य में किसी एक त्योहार के दौरान अब तक का सबसे बड़ा पौधारोपण प्रयास रहा।
- यह अभियान **प्रधानमंत्री की "एक पेड़ माँ के नाम" पहल** के अनुरूप आयोजित किया गया।
- इस अभियान में **स्थानीय प्रशासन**, **वन विभाग**, स्वयं सेवी संस्थाएँ (NGOs), **महिला समूह** तथा **युवाओं** की सक्रिय भागीदारी रही।
- **गाँवों, कस्बों, शहरों, विद्यालयों और** आँगनवाड़ी केंद्रों में यह पौधारोपण अभियान व्यापक रूप से संचालित किया गया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

"एक पेड़ माँ के नाम" पहल

- **शुभारंभ:**
  - विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून 2024) पर, प्रधानमंत्री ने **पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी** को **माताओं** के प्रति **सम्मान** के साथ जोड़ते हुए '**एक पेड़ माँ के नाम**' अभियान का शुभारंभ किया।
  - इस अभियान का उद्घाटन **दिल्ली** के बुद्ध जयंती पार्क में **पीपल का पेड़** लगाकर किया गया।
- **वृक्षारोपण का प्रतीकात्मक संकेत:**
  - यह अभियान लोगों को **अपनी माँ के नाम पर एक पेड़ लगाने** के लिये प्रोत्साहित करता है, जो **पर्यावरण संरक्षण** में योगदान देते हुए **माताओं की पोषणकारी भूमिका** के प्रति एक **भावभीनी श्रद्धांजलि** का प्रतीक है।
  - **पेड़**, माताओं की तरह ही, **जीवनयापन**, **सुरक्षा** और **भावी पीढ़ियों** के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
- **सतत् विकास में योगदान:**
  - यह पहल भारत के सतत् विकास के व्यापक प्रयासों के अनुरूप है तथा **पर्यावरण संरक्षण** को बढ़ावा देने और **भावी पीढ़ियों** के लिये **स्थायी विरासत** बनाने में **व्यक्तिगत कार्यों** तथा **सामूहिक प्रयासों** दोनों की आवश्यकता पर ज़ोर देती है।

उत्तराखंड के स्कूलों में गीता श्लोकों का पाठ

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड सरकार ने राज्य के सभी **सरकारी विद्यालयों** में प्रतिदिन प्रार्थना सभा के दौरान **भगवद्गीता का एक श्लोक** अनिवार्य रूप से पढ़े जाने का निर्देश दिया है। इसका उद्देश्य आधुनिक शिक्षा के साथ पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली को समाहित कर विद्यार्थियों में **चरित्र निर्माण** से संबंधित गुणों का विकास करना है।

मुख्य बिंदु

- माध्यमिक शिक्षा निदेशक द्वारा जारी निर्देश में शिक्षकों को **पाठ के लिये "सप्ताह का एक श्लोक" चुनने का निर्देश दिया गया है।**
- **मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, व्यवहार विज्ञान और नैतिक दर्शन पर आधारित भगवद् गीता की शिक्षाओं को** मानवीय **मूल्यों, नेतृत्व, भावनात्मक संतुलन तथा वैज्ञानिक सोच में उनके योगदान को धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से** समझाया जाएगा।
- यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 **के अनुरूप है**, जो शिक्षा पाठ्यक्रम में भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है।

भगवद् गीता

- भगवद् गीता, ऋषि वेदव्यास द्वारा रचित **700 श्लोकों वाला दार्शनिक संवाद है, जो महाभारत के भीष्म पर्व में अंतर्निहित है।**
- इसमें **अर्जुन और भगवान श्रीकृष्ण** के मध्य हुआ संवाद है, जिसमें **धर्म (कर्त्तव्य), कर्म (कार्य), भक्ति तथा ज्ञान** के विषयों पर शिक्षाएँ दी गई हैं।
- गीता में वैदिक, बौद्ध, जैन और चार्वाक दर्शन सहित विभिन्न **भारतीय दार्शनिक विचारधाराओं** का समन्वय किया गया है तथा यह **कर्मयोग** का आधार भी प्रदान करती है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

उत्तराखंड में पर्यटक वहन क्षमता सर्वेक्षण

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड के पारिस्थितिकी रूप से **संवेदनशील पर्वतीय नगरों** को अनियमित पर्यटन के बढ़ते प्रभाव से बचाने के लिये, राज्य सरकार नैनीताल, कैंची धाम और भवाली में अपना **पहला पर्यटक वहन क्षमता सर्वेक्षण** कराएगी, जिसका उद्देश्य भीड़भाड़, अत्यधिक वाहनों के आवागमन और सार्वजनिक सुविधाओं पर अत्यधिक बोझ के कारण बुनियादी ढाँचे पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना है।

- इससे पहले, सितंबर 2024 में, राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) ने राज्य सरकार को नैनीताल ज़िले को उसकी वहन क्षमता और **पर्यावरणीय संवेदनशीलता** के आधार पर **निषिद्ध**, **विनियमित** और **विकास क्षेत्रों** में वर्गीकृत करने का निर्देश दिया था।

मुख्य बिंदु

- **सर्वेक्षण का क्षेत्र और अपेक्षित परिणाम:**
  - उत्तराखंड पर्यटन विकास बोर्ड (UTDB) **सीसीटीवी निगरानी** के सहयोग से, **चरम और मंद** दोनों मौसमों के दौरान सर्वेक्षण करेगा, जिसमें **वाहनों** के आवागमन, **पर्यटकों की संख्या** और आतिथ्य क्षमता का आकलन किया जाएगा।
  - निष्कर्षों के आधार पर, राज्य एक **पर्यटक पंजीकरण प्रणाली** लागू कर सकता है और पारिस्थितिकी संरक्षण, यातायात प्रबंधन तथा बुनियादी ढाँचे के संवर्द्धन के उद्देश्य से एक स्थायी रोडमैप विकसित कर सकता है।
- **सर्वेक्षण की आवश्यकता:**
  - पर्यटन के **चरम मौसम** के दौरान प्रतिदिन **7,500 से अधिक चार पहिया वाहन** नैनीताल शहर में प्रवेश करते हैं, जिसका अर्थ है कि प्रतिदिन लगभग 30,000 पर्यटक आते हैं, जिससे शहर के सीमित **बुनियादी ढाँचे** पर अत्यधिक दबाव पड़ता है।

वहन क्षमता

- **परिचय:**
  - वहन क्षमता से तात्पर्य उस **अधिकतम जनसंख्या या गतिविधि स्तर से है** जिसे कोई विशेष **क्षेत्र अपने प्राकृतिक संसाधनों** और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना सहन कर सकता है।
  - इसे दो घटकों के आधार पर निर्धारित किया जाता है:
    - जैविक घटक: जैसे—वनस्पति और जल विज्ञान
    - अजैविक घटक: जैसे—भू-आकृति और जलवायु
- **वहन क्षमता का आकलन करने के दृष्टिकोण:**
  - **प्लैनेटरी बाउंड्रीज़ पद्धति:** इस पद्धति का उपयोग जलवायु परिवर्तन, भूमि क्षरण, प्रदूषण और जल संकट सहित वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में किया जाता है। यह पृथ्वी पर मानवीय गतिविधियों के लिये **सुरक्षित संचालन सीमाओं** की पहचान करने में सहायक है।
  - **जैव-क्षमता ओवरशूट दृष्टिकोण:** एक स्थिरता मापक जो **प्राकृतिक प्रणालियों** पर मनुष्यों की पारिस्थितिकी माँग को मापता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि हम एक वर्ष के पारिस्थितिकीय संसाधनों का उपभोग केवल कुछ महीनों में कैसे कर लेते हैं, जिसे अर्थ ओवरशूट डे जैसी अवधारणाओं द्वारा दर्शाया गया है।
- **महत्त्व:**
  - **पर्यावरणीय स्थिरता** और **विकास की आवश्यकताओं** के बीच संतुलन बनाए रखने के लिये **वहन क्षमता** का आकलन आवश्यक है।
  - सावधानी सिद्धांत द्वारा निर्देशित होने पर, यह विकासात्मक शासन और **प्राकृतिक प्रणालियों** की दीर्घकालिक स्थिरता के बीच संघर्षों को हल करने के लिये एक **व्यावहारिक ढाँचा** प्रदान करता है।

✦ ✦ ✦ ✦

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME